

बाबर की बावड़ी और छत पर बने तालाब (जल-संयन्त्र)(1527-73)

यह वह स्थान है जहाँ बाबर की बावड़ी और अकबर का जल-संयन्त्र स्थित था। बाबर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उसने आगरा के किले में पत्थर का उक बावड़ी बनवाई। वह तीन मंजिल की थी। मध्य में बैल रहेंट चलाते थे और पानी ऊपर चढ़ता था। ये सभी उन सीढ़ियों पर खुलते थे जो नीचे पानी तक जाती थीं। यह बावड़ी खानवा युद्ध के बाद 1527 ई० में बनकर पूरी हुई। बाबर ने यहाँ पत्थर का उक शिलालेख भी लगाया था। इसके पास ही कुछ ऊँचे तल पर उक कुआँ था। बावड़ी से पानी ऊँचकर इसमें भरा जाता था। इसमें भी उक रहेंट लगा था जो किले की प्राकार के पास स्थित उक बाग को जलापूर्ति करता था, जैसा बाबर ने लिखा है।

जब अकबर ने अपने महल बनवाये (1565-1573) तो इस व्यवस्था में कुछ परिवर्तन किये गये। उक तीसरा रहेंट लगाने की आवश्यकता हुई जिससे पानी और ऊँचा चढ़ाया जा सके। इसलिये तीन मंजिल का उक जल-भवन दूसरे कुएँ के मुख्य पर बनाया गया और उसकी छत पर तीन तालाब बनाये गये। बाबर की बावड़ी से पानी ऊँचकर इन्हें भरा जाता था। उत्तरी तालाब की दीवार में 27 पाइपों के मुँह खुलते थे (9-9 की 3 शृंखलाओं में)। इनके ऊपर वृत्ताकार फलकों पर फारसी में अभिलेख थे जो क्रम से उन हमारों नहरों और तालाबों को सूचित करते थे जहाँ ये पानी पहुँचाते थे। इस जल-संयन्त्र को यहाँ से जब चाहे चलाया या बन्द किया जा सकता था।

जब शाहजहाँनी महल बना तब यह योजना फिर बदलनी पड़ी। बाबर की बावड़ी और कुएँ के बीच में आरी दीवारें खड़ी कर दी गयीं। बावड़ी बन्द हो गयी। छत पर बने तालाबों के लिए जलापूर्ति की वैकल्पिक व्यवस्था की गई और दुबारा पाइप डालकर पानी नये महलों तक ले जाया गया। बाबर की बावड़ी ठीक इसी स्थान के नीचे ढब गयी है और आंशिक रूप से दैखी जा सकती है। छत पर स्थित तालाब और उनके अभिलेखित-फलक अभी भी ज्यों के त्यों हैं।

BABUR'S BAOLI AND OVERHEAD TANKS (WATER-WORKS) (1527-73 A.D.)

This is the spot where Babur's *Baoli* and water-works were situated. Babur recorded in his *memoirs* that he built a stone *baoli*/(Step-Well) in Agra Fort. It had three-storeys. The bullock turned the water-wheel (*Rehant*) for raising water. In the second storey, all these opened on the stairs which descended down to water. It was completed after the battle of *Khanwa* in 1527 A.D. and Babur placed there an inscription. A well was attached to it at a higher level and water from the *Baoli* was first raised to this well. A '*Rehant*' also worked in it "by means of which water is carried along the ramparts to the high garden", as Babur recorded.

This was altered when Akbar built his palaces (1565-1573). It was necessary to use a third '*Rehant*' to raise water. Therefore, a three-storeyed water-pavilion was erected on the mouth of the second well and three overhead tanks were built on its roof. Water from Babur's *Baoli* was conducted into these tanks. The northern wall has 27 pipe-mouths (9 in 3 series) with circular Persian tablets above them denoting the *Hammams*, canals and tanks to which the pipes conducted water respectively. This water-works was thus fully controlled.

The plan was again altered when *Shahjahani-Mahal* was built, massive walls were raised in the middle of Babur's *Baoli* and well, and the rooms were closed up. The *Baoli* became defunct. Alternate arrangement of water-supply to the overhead tanks was made and they were again used with relaid pipes leading to the new palaces. Babur's *Baoli* is now buried in the basement apartments, just below this spot and is only partially accessible. The overhead tanks with inscribed tablets have survived intact.

